SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.47

वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवादः चुनौतियाँ और संभावनाएँ

यादव रत्नेश कुमार केदारनाथ[1], डॉ. मनोज सिंह यादव[2]
[1]शोध छात्र, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही
[2]सहायक आचार्य, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही
ई–मेलः rockwithbunty@gmail.com

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी का विश्व वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति, मुक्त बाजार व्यवस्था तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग की नई संरचनाओं के दौर से गुजर रहा है। वैश्वीकरण ने विश्व के देशों के मध्य आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी संबंधों को अभूतपूर्व रूप से सुदृढ़ किया है। इसके परिणामस्वरूप पूँजी, वस्तुओं, सेवाओं, सूचना तथा मानव संसाधनों का वैश्विक स्तर पर तीव्र प्रवाह संभव हुआ है। भारत ने 1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों को अपनाकर विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई। इससे आर्थिक विकास, विदेशी निवेश, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दूसरी ओर वैश्वीकरण ने भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। सांस्कृतिक समरूपीकरण, उपभोक्तावाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बढ़ता प्रभाव, आर्थिक असमानता, स्थानीय उद्योगों पर संकट, डिजिटल संप्रभुता तथा राष्ट्रीय पहचान जैसे प्रश्न आज अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। इन परिस्थितियों में भारतीय राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक अवधारणा न रहकर सांस्कृतिक आत्मविश्वास, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक उत्तरदायित्व का भी प्रतीक बन गया है। भारतीय राष्ट्रवाद की विशेषता यह है कि वह संकीर्ण राष्ट्रवाद के स्थान पर समावेशी, लोकतांत्रिक और मानवतावादी दृष्टिकोण का समर्थन करता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'', ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' जैसी अवधारणाएँ भारत की उसी सभ्यतागत दृष्टि को व्यक्त करती हैं जिसमें राष्ट्रीय हित और वैश्विक कल्याण परस्पर विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। यह शोध–पत्र वैश्वीकरण और भारतीय राष्ट्रवाद के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए वर्तमान चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का ऐतिहासिक एवं समकालीन दृष्टिकोण से अध्ययन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्दः *वैश्वीकरण, भारतीय राष्ट्रवाद, आर्थिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी, वैश्विक शासन, आत्मनिर्भर भारत, वसुधैव कुटुम्बकम, विकसित भारत, सांस्कृतिक अस्मिता, वैश्विक राष्ट्रवाद।*

प्रस्तावनाः बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ ने विश्व व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन किए। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना को संस्थागत स्वरूप देने के लिए संयुक्त राष्ट्र की स्थापना

हुई। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं, मुक्त व्यापार व्यवस्था तथा वैश्विक शासन की अवधारणाओं का विकास हुआ। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में आर्थिक उदारीकरण और मुक्त बाजार की नीतियों ने वैश्वीकरण को नई गति प्रदान की। भारत ने 1991 में आर्थिक सुधारों को अपनाकर अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के लिए खोला। इससे विदेशी निवेश, तकनीकी हस्तांतरण, सूचना प्रौद्योगिकी, संचार क्रांति तथा सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित हुआ तथा डिजिटल क्रांति, स्टार्टअप संस्कृति और नवाचार के क्षेत्र में नई पहचान स्थापित करने में सफल रहा। किन्तु वैश्वीकरण केवल आर्थिक परिवर्तन नहीं है। यह संस्कृति, राजनीति, शिक्षा, मीडिया, भाषा, उपभोग, जीवन–शैली तथा सामाजिक मूल्यों को भी प्रभावित करता है। यही कारण है कि वैश्वीकरण के साथ–साथ राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक विरासत और सभ्यतागत मूल्यों की रक्षा का प्रश्न भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया। भारतीय राष्ट्रवाद का समकालीन स्वरूप इसी द्वंद्व से निर्मित हुआ है, जिसमें वैश्विक सहभागिता और राष्ट्रीय अस्मिता के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास दिखाई देता है। भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी विशेषता उसकी समावेशी प्रकृति है। यह किसी जाति, भाषा या धर्म विशेष तक सीमित न होकर विविधता में एकता, लोकतंत्र, सहिष्णुता और सांस्कृतिक बहुलता को स्वीकार करता है। भारतीय परंपरा ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देती है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद वैश्विक सहयोग का विरोध नहीं करता, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए विश्व के साथ सहभागिता का समर्थन करता है।

वर्तमान समय में जब विश्व जलवायु परिवर्तन, महामारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, आर्थिक असमानता तथा भू–राजनीतिक संघर्ष जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भारत का संतुलित राष्ट्रवाद वैश्विक समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। जी–20 की अध्यक्षता के दौरान भारत द्वारा प्रस्तुत ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' का मंत्र इसी दृष्टिकोण का परिचायक है।

वैश्वीकरण : अवधारणा एवं विकास

वैश्वीकरण (Globalization) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाएँ, समाज, संस्कृतियाँ तथा राजनीतिक व्यवस्थाएँ परस्पर अधिक निकट और परस्पर निर्भर होती जाती हैं। इस प्रक्रिया में वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी, तकनीक, सूचना तथा मानव संसाधनों का राष्ट्रीय सीमाओं से परे मुक्त प्रवाह बढ़ता है। आधुनिक संचार तकनीक, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने वैश्वीकरण को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। वैश्वीकरण का वैचारिक आधार मुक्त व्यापार, प्रतिस्पर्धा, उदारीकरण तथा निजीकरण पर आधारित है। इसके समर्थकों का मानना है कि मुक्त बाजार आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और नवाचार को बढ़ावा देता है। वहीं आलोचकों के अनुसार यह प्रक्रिया आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक समरूपीकरण तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते प्रभुत्व को भी जन्म देती है।

भारत में वैश्वीकरण का वास्तविक आरम्भ 1991 के आर्थिक सुधारों से माना जाता है। भुगतान संतुलन के संकट के समय भारत ने नई आर्थिक नीति को अपनाया, जिसके अंतर्गत लाइसेंस–परमिट व्यवस्था में कमी, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन, सार्वजनिक क्षेत्र के पुनर्गठन तथा व्यापार उदारीकरण जैसे कदम उठाए गए। परिणामस्वरूप भारत की आर्थिक वृद्धि दर में वृद्धि हुई, विदेशी मुद्रा भंडार मजबूत हुआ, सेवा क्षेत्र का तीव्र विस्तार हुआ तथा सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग ने वैश्विक स्तर पर नई पहचान बनाई। हालाँकि वैश्वीकरण का प्रभाव केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं रहा। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने विश्व को एक डिजिटल समुदाय में बदल दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, वित्तीय सेवाएँ तथा

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

शासन की प्रक्रियाएँ भी डिजिटल माध्यमों से संचालित होने लगीं। इससे ज्ञान और सूचना का लोकतंत्रीकरण हुआ, किन्तु साथ ही साइबर अपराध, डेटा सुरक्षा, फेक न्यूज और डिजिटल उपनिवेशवाद जैसी नई चुनौतियाँ भी सामने आईं।

सांस्कृतिक दृष्टि से वैश्वीकरण ने विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया। योग, आयुर्वेद, भारतीय भोजन, भारतीय दर्शन तथा भारतीय शास्त्रीय कलाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिली। दूसरी ओर उपभोक्तावादी संस्कृति, पश्चिमी जीवन–शैली तथा बाजार–केन्द्रित मूल्यों का प्रभाव भी भारतीय समाज पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। परिणामस्वरूप सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया।

राजनीतिक दृष्टि से भी वैश्वीकरण ने वैश्विक शासन की अवधारणा को सुदृढ़ किया है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा जी–20 जैसे मंच वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं। आज जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा तथा साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ किसी एक राष्ट्र तक सीमित नहीं हैं। इनके समाधान के लिए सामूहिक वैश्विक प्रयास आवश्यक हैं। भारत ने भी इस नई विश्व व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाई है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना गठबंधन, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, वैक्सीन मैत्री तथा जी–20 की अध्यक्षता के माध्यम से भारत ने यह प्रदर्शित किया है कि वह केवल एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था ही नहीं, बल्कि उत्तरदायी वैश्विक शक्ति के रूप में भी अपनी भूमिका निभाना चाहता है। स्पष्ट है कि वैश्वीकरण ने भारत के लिए विकास के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं, किन्तु साथ ही राष्ट्रीय अस्मिता, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सांस्कृतिक संरक्षण की चुनौतियों को भी जन्म दिया है। इन्हीं परिस्थितियों में भारतीय राष्ट्रवाद का समकालीन स्वरूप विकसित हुआ है, जो वैश्विक सहभागिता और राष्ट्रीय स्वाभिमान के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं ऐतिहासिक विकास

भारतीय राष्ट्रवाद आधुनिक भारत के इतिहास की सर्वाधिक प्रभावशाली वैचारिक धाराओं में से एक है। यह केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राजनीतिक संघर्ष का माध्यम नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति, आध्यात्मिक परंपरा तथा सामाजिक एकता की अभिव्यक्ति भी था। यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास मुख्यतः भाषा, नस्ल और राजनीतिक प्रभुत्व के आधार पर हुआ, जबकि भारतीय राष्ट्रवाद विविधताओं के मध्य एकता, सह–अस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय पर आधारित रहा है। भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन भारतीय सभ्यता में निहित हैं। वैदिक साहित्य, उपनिषदों, महाकाव्यों, बौद्ध एवं जैन परंपराओं तथा भक्ति–सूफी आंदोलन ने भारत को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'', ''वसुधैव कुटुम्बकम'' तथा ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' जैसे सूत्र भारतीय राष्ट्रवाद के नैतिक आधार हैं। इनका उद्देश्य किसी अन्य राष्ट्र पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना है।

उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद ने संगठित राजनीतिक स्वरूप ग्रहण किया। सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास का संचार किया। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और सभ्यता को राष्ट्रीय एकता का आधार बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रवाद लोकतंत्र, समानता, सामाजिक न्याय तथा स्वराज की आकांक्षा से जुड़ गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप और व्यापक हुआ। संविधान ने धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय तथा संघीय व्यवस्था के माध्यम से राष्ट्रवाद को संस्थागत आधार प्रदान किया। वर्तमान समय में भारतीय राष्ट्रवाद केवल सीमाओं की सुरक्षा

तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास, वैज्ञानिक प्रगति, सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा वैश्विक नेतृत्व से भी जुड़ गया है।

वैश्वीकरण और भारतीय राष्ट्रवाद के संबंध को विरोधाभासी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक दृष्टि से समझा जाना चाहिए। वैश्वीकरण ने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था, तकनीकी नवाचार तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग से जोड़ा, जबकि भारतीय राष्ट्रवाद ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि यह विकास राष्ट्रीय हितों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक न्याय के अनुरूप हो। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत में विदेशी निवेश, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग, सेवा क्षेत्र तथा विनिर्माण उद्योगों का उल्लेखनीय विस्तार हुआ। भारतीय कंपनियों ने वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बनाई और भारतीय युवाओं के लिए रोजगार तथा उद्यमिता के नए अवसर उपलब्ध हुए। आज भारत विश्व की प्रमुख डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित है।इसके साथ ही भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव भी बढ़ा। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, भारतीय खान–पान, संगीत, सिनेमा तथा प्रवासी भारतीय समुदाय ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर सुदृढ़ किया। इस प्रकार वैश्वीकरण भारतीय संस्कृति के प्रसार का भी माध्यम बना। किन्तु वैश्वीकरण का प्रभाव एकरूप नहीं रहा। इसके कारण उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक समरूपीकरण, पश्चिमी जीवन–शैली तथा बाजार–केंद्रित मूल्यों का प्रभाव बढ़ा। अनेक स्थानीय भाषाएँ, लोककलाएँ तथा पारंपरिक उद्योग प्रतिस्पर्धा के दबाव में आए। इससे सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय पहचान का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो गया।

भारतीय राष्ट्रवाद इस चुनौती का उत्तर संतुलित दृष्टिकोण से देता है। इसका उद्देश्य विश्व से अलग–थलग होना नहीं, बल्कि अपनी सभ्यतागत पहचान को सुरक्षित रखते हुए वैश्विक प्रगति में सक्रिय सहभागिता करना है। यही कारण है कि आज ‘‘आत्मनिर्भर भारत’’, ‘‘मेक इन इंडिया’’, ‘‘डिजिटल इंडिया’’, ‘‘स्टार्टअप इंडिया’’ तथा ‘‘विकसित भारत 2047’’ जैसी नीतियाँ वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवाद की प्रमुख चुनौतियाँ

(1) सांस्कृतिक वैश्वीकरण एवं सांस्कृतिक अस्मिता

वैश्वीकरण की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण से जुड़ी हुई है। वैश्विक मीडिया, इंटरनेट, मनोरंजन उद्योग तथा उपभोक्तावादी संस्कृति ने जीवन–शैली में व्यापक परिवर्तन किए हैं। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव विशेषकर युवाओं में अधिक दिखाई देता है। इसके परिणामस्वरूप अनेक स्थानीय भाषाएँ, लोककलाएँ तथा पारंपरिक ज्ञान–परंपराएँ उपेक्षा का सामना कर रही हैं। भारतीय राष्ट्रवाद का दायित्व केवल सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना नहीं, बल्कि उसे समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक बनाना भी है। योग, आयुर्वेद, भारतीय शास्त्रीय संगीत, हस्तशिल्प तथा भारतीय भाषाओं के वैश्विक प्रसार से यह सिद्ध होता है कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास और वैश्वीकरण साथ–साथ आगे बढ़ सकते हैं।

(2) आर्थिक वैश्वीकरण एवं आर्थिक राष्ट्रवाद

वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की है, किन्तु आर्थिक असमानता भी बढ़ी है। महानगरों और ग्रामीण क्षेत्रों, संगठित तथा असंगठित क्षेत्रों तथा बड़े उद्योगों और लघु उद्योगों के बीच विकास का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धा के कारण अनेक छोटे उद्योग प्रभावित हुए हैं। ऐसी स्थिति में आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्देश्य संरक्षणवाद नहीं, बल्कि संतुलित आर्थिक विकास है। स्थानीय उद्योगों, कृषि, कुटीर उद्योगों तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को सशक्त बनाकर ही आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जा सकता है। आर्थिक विकास तभी सार्थक होगा जब उसके लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचें।

(3) डिजिटल वैश्वीकरण एवं डेटा संप्रभुता

डिजिटल तकनीक ने शासन, शिक्षा, व्यापार तथा संचार के स्वरूप को बदल दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्लाउड कंप्यूटिंग, सोशल मीडिया तथा डिजिटल भुगतान ने विकास की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। किन्तु इसके साथ डेटा सुरक्षा, साइबर अपराध, डिजिटल निगरानी, फेक न्यूज तथा विदेशी डिजिटल कंपनियों का बढ़ता प्रभाव नई चुनौतियाँ लेकर आया है। डेटा आज नया आर्थिक संसाधन बन चुका है। इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिकों की गोपनीयता की रक्षा के लिए डिजिटल संप्रभुता अत्यंत आवश्यक हो गई है।

(4) सामाजिक विषमता और समावेशी विकास

यद्यपि वैश्वीकरण से राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है, परंतु विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा आय के अवसरों में क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताएँ बनी हुई हैं। इससे सामाजिक न्याय की अवधारणा प्रभावित होती है। भारतीय राष्ट्रवाद की सफलता तभी संभव है जब विकास समावेशी हो और समाज के कमजोर, वंचित तथा ग्रामीण वर्गों को समान अवसर प्राप्त हों। लोकतांत्रिक राष्ट्रवाद का वास्तविक आधार सामाजिक न्याय और समान अवसर है।

(5) पर्यावरणीय संकट एवं सतत विकास

वैश्वीकरण के कारण औद्योगीकरण और उपभोग में तीव्र वृद्धि हुई है, जिससे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव–विविधता का क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। भारत जैसे विकासशील देश के सामने चुनौती यह है कि आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व की समर्थक रही है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का समकालीन स्वरूप सतत विकास, हरित ऊर्जा, जल संरक्षण, जैविक कृषि तथा पर्यावरणीय न्याय को राष्ट्रीय विकास का अभिन्न अंग मानता है।

(6) भू–राजनीतिक चुनौतियाँ एवं राष्ट्रीय सुरक्षा

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था बहुध्रुवीय होती जा रही है। सीमा विवाद, आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा, साइबर युद्ध, ऊर्जा सुरक्षा तथा आपूर्ति शृंखलाओं की अनिश्चितता ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को व्यापक बना दिया है। भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी सामरिक क्षमता को सुदृढ़ करते हुए वैश्विक मंचों पर सक्रिय और संतुलित भूमिका निभाए। राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक सहयोग परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक हैं। भारत की विदेश नीति भी इसी संतुलित दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि वैश्वीकरण भारतीय राष्ट्रवाद के लिए केवल चुनौतियाँ ही नहीं, बल्कि आत्ममंथन और पुनर्निर्माण का अवसर भी प्रदान करता है। आवश्यकता इस बात की है कि भारत आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास तथा वैश्विक सहयोग को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखे।

वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवाद की संभावनाएँ

वैश्वीकरण को प्रायः केवल आर्थिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, किंतु वास्तव में यह राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी तथा सभ्यतागत परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया है। यदि कोई राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक पहचान, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा आर्थिक हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम हो, तो वैश्वीकरण उसके लिए विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है। भारत के संदर्भ में भी वैश्वीकरण अनेक नई संभावनाएँ

लेकर आया है। भारत आज विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और अपनी जनसंख्या, लोकतांत्रिक व्यवस्था, तकनीकी क्षमता तथा सांस्कृतिक विरासत के कारण वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर है।

(1) आत्मनिर्भर भारत और आर्थिक राष्ट्रवाद

समकालीन भारत में ''आत्मनिर्भर भारत'' केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मविश्वास का प्रतीक है। इसका उद्देश्य विश्व से अलग–थलग होना नहीं, बल्कि ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम होने के साथ–साथ घरेलू उत्पादन, नवाचार और रोजगार को भी प्रोत्साहित करे। भारत ने रक्षा उत्पादन, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल निर्माण, हरित ऊर्जा, रेलवे, अंतरिक्ष विज्ञान तथा डिजिटल तकनीक के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) जैसी नीतियाँ विनिर्माण क्षेत्र को सशक्त बनाने का प्रयास कर रही हैं। इससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे तथा विदेशी आयात पर निर्भरता कम होगी। आर्थिक राष्ट्रवाद का वास्तविक उद्देश्य संरक्षणवाद नहीं, बल्कि ऐसी संतुलित अर्थव्यवस्था का निर्माण है जिसमें विदेशी निवेश और स्वदेशी उद्योग दोनों परस्पर पूरक बनें। यदि आर्थिक विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, तभी राष्ट्रवाद का सामाजिक आधार सुदृढ़ होगा।

(2) डिजिटल भारत और तकनीकी नेतृत्व

इक्कीसवीं शताब्दी ज्ञान और प्रौद्योगिकी की शताब्दी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग, जैव–प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था भविष्य के विकास की दिशा निर्धारित कर रहे हैं। भारत ने डिजिटल भुगतान, आधार, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI), ई–गवर्नेंस तथा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से विश्व में नई पहचान बनाई है। भारतीय युवाओं की नवाचार क्षमता भारत को वैश्विक डिजिटल शक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है। डिजिटल राष्ट्रवाद का अर्थ इंटरनेट पर नियंत्रण स्थापित करना नहीं, बल्कि डेटा सुरक्षा, साइबर संप्रभुता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नैतिक उपयोग तथा नागरिकों की डिजिटल स्वतंत्रता की रक्षा करना है। आने वाले समय में डिजिटल संप्रभुता राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण आयाम बनेगी।

(3) भारतीय संस्कृति और सॉफ्ट पावर

भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सांस्कृतिक विरासत है। योग, आयुर्वेद, बौद्ध दर्शन, भारतीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, भारतीय भाषाएँ, साहित्य, अध्यात्म तथा परिवार व्यवस्था विश्व के अनेक देशों में सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, आयुर्वेद के प्रति वैश्विक रुचि, भारतीय भोजन की लोकप्रियता तथा प्रवासी भारतीय समुदाय की उपलब्धियाँ भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ कर रही हैं। सांस्कृतिक कूटनीति भारत को विश्व समुदाय के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन रही है।

(4) वैश्विक शासन में भारत की भूमिका

वर्तमान विश्व अनेक जटिल संकटों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद, साइबर अपराध, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा संकट तथा भू–राजनीतिक संघर्षों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इन समस्याओं का समाधान किसी एक राष्ट्र के लिए संभव नहीं है। भारत ने वैश्विक मंचों पर सदैव बहुपक्षवाद, संवाद तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का समर्थन किया है। जी–20 की अध्यक्षता के दौरान भारत द्वारा प्रस्तुत ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' का मंत्र भारतीय सभ्यता की वैश्विक दृष्टि को अभिव्यक्त करता है। भारत आज वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज के रूप में भी उभर रहा है। विकासशील देशों की आवश्यकताओं, जलवायु न्याय, खाद्य सुरक्षा तथा समावेशी विकास के प्रश्नों पर भारत की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण होती जा रही है।

(5) विकसित भारत 2047 : राष्ट्रवाद की नई दिशा

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, अनुसंधान, नवाचार, सुशासन, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरणीय संतुलन के साथ समग्र विकास सुनिश्चित करना है। विकसित भारत की अवधारणा तभी सफल होगी जब विकास समावेशी हो, लोकतांत्रिक संस्थाएँ सुदृढ़ हों, महिलाओं और युवाओं की सहभागिता बढ़े तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानता कम हो। आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद इसी व्यापक विकास दृष्टि का समर्थन करता है। भारतीय सभ्यता का मूल संदेश ''वसुधैव कुटुम्बकम'' यही है कि सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है। इस दृष्टिकोण में राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक कल्याण में योगदान देता है। रामायण में भगवान राम द्वारा लंका विजय के पश्चात राज्य विभीषण को सौंपना तथा आधुनिक भारत द्वारा बांग्लादेश की स्वतंत्रता में सहयोग करने के बावजूद उसके विलय का प्रयास न करना भारतीय राष्ट्रवाद की इसी नैतिक परंपरा को दर्शाता है। भारतीय राष्ट्रवाद शक्ति के साथ मर्यादा, विजय के साथ न्याय तथा राष्ट्रीय हित के साथ वैश्विक उत्तरदायित्व का समन्वय करता है। आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, महामारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, परमाणु हथियारों की होड़ तथा आर्थिक असमानता जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब भारत का यह समावेशी राष्ट्रवाद वैश्विक शांति और सतत विकास की दिशा में एक व्यवहारिक विकल्प प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण और भारतीय राष्ट्रवाद को परस्पर विरोधी अवधारणाओं के रूप में नहीं देखा जा सकता। वैश्वीकरण ने भारत के आर्थिक, तकनीकी तथा कूटनीतिक विकास के लिए नए अवसर उपलब्ध कराए हैं, जबकि भारतीय राष्ट्रवाद ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि यह विकास राष्ट्रीय स्वाभिमान, सांस्कृतिक अस्मिता तथा सामाजिक न्याय के अनुरूप हो। निस्संदेह वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक समरूपीकरण, आर्थिक असमानता, डिजिटल संप्रभुता, पर्यावरणीय संकट तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसी अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। किन्तु इन चुनौतियों के भीतर ही भारत के लिए नए अवसर भी निहित हैं। यदि भारत शिक्षा, विज्ञान, नवाचार, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक कूटनीति तथा समावेशी विकास को समान महत्व देता है, तो वह न केवल विकसित राष्ट्र बनेगा बल्कि वैश्विक व्यवस्था के पुनर्निर्माण में भी निर्णायक भूमिका निभा सकेगा।

भारतीय राष्ट्रवाद का भविष्य संकीर्णता, अलगाव या आक्रामकता में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, लोकतंत्र, बहुलतावाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मानव कल्याण की भावना में निहित है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'', ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' जैसी अवधारणाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हुआ होते हुए भी विश्व मानवता के व्यापक हितों का समर्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी शक्ति उसकी समन्वयकारी प्रकृति है। यही विशेषता भारत को इक्कीसवीं शताब्दी में एक उत्तरदायी, आत्मनिर्भर, लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध तथा विश्वसनीय वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने की क्षमता प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

1. Anderson, B. (2006). Imagined communities: Reflections on the origin and spread of nationalism (Rev. ed.). Verso.
2. Appadurai, A. (1996). Modernity at large: Cultural dimensions of globalization. University of Minnesota Press.
3. Chandra, B. (1989). India's struggle for independence. Penguin Books.

4. Chatterjee, P. (1993). The nation and its fragments: Colonial and postcolonial histories. Princeton University Press.
5. Das, G. (2002). India unbound. Penguin Books.
6. Friedman, T. L. (2005). The world is flat. Farrar, Straus and Giroux.
7. Gandhi, M. K. (1909/2009). Hind Swaraj. Navajivan Publishing House.
8. Gellner, E. (1983). Nations and nationalism. Cornell University Press.
9. Guha, R. (2007). India after Gandhi. Picador India.
10. Held, D., & McGrew, A. (2007). Globalization/Anti-globalization (2nd ed.). Polity Press.
11. Hobsbawm, E. J. (1992). Nations and nationalism since 1780. Cambridge University Press.
12. Huntington, S. P. (1996). The clash of civilizations and the remaking of world order. Simon & Schuster.
13. Keohane, R. O., & Nye, J. S. (2012). Power and interdependence (4th ed.). Pearson.
14. Khilnani, S. (1997). The idea of India. Farrar, Straus and Giroux.
15. Nehru, J. (1946). The discovery of India. Oxford University Press.
16. Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.
17. Smith, A. D. (1991). National identity. Penguin Books.
18. Stiglitz, J. E. (2002). Globalization and its discontents. W. W. Norton.
19. Tagore, R. (1917). Nationalism. Macmillan.
20. United Nations. (2015). Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development. United Nations.
21. World Bank. (2024). World Development Report 2024. World Bank.
22. World Economic Forum. (2024). The Global Risks Report 2024. WEF.
23. Government of India. (2024). Economic Survey 2023–24. Ministry of Finance.
24. NITI Aayog. (2023). India@2047: Vision for a Developed India. Government of India.
25. अग्रवाल, आर. सी. (2020). भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आंदोलन. एस. चाँद एंड कम्पनी।
26. अवस्थी, ए. पी. (2018). भारतीय राजनीतिक चिंतन. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
27. उपाध्याय, दीनदयाल. (2016). एकात्म मानववाद. सुरुचि प्रकाशन।
28. कुमार, रविन्द्र. (2017). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन. राजकमल प्रकाशन।
29. गांधी, मोहनदास करमचंद. (2019). हिन्द स्वराज. नवजीवन प्रकाशन।
30. ग्रोवर, बी. एल., एवं ग्रोवर, एस. (2021). आधुनिक भारत का इतिहास. एस. चाँद एंड कम्पनी।
31. चन्द्र, बिपिन. (2019). आधुनिक भारत. ओरिएंट ब्लैकस्वान।
32. चन्द्र, बिपिन. (2018). भारत का स्वतंत्रता संघर्ष. हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
33. जौहरी, जे. सी. (2016). समकालीन राजनीतिक सिद्धांत. स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
34. जोशी, लक्ष्मीकांत. (2018). वैश्वीकरण और भारतीय समाज. रावत पब्लिकेशन।
35. ठाकुर, देवेन्द्र. (2015). भारतीय राष्ट्रवादः स्वरूप एवं विकास. ग्रंथ शिल्पी।
36. नंदा, बी. आर. (2016). महात्मा गांधीः एक जीवनी (हिन्दी संस्करण). राजपाल एंड संस।
37. नेहरू, जवाहरलाल. (2018). भारत एक खोज. सस्ता साहित्य मंडल।
38. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र. (2017). भारतीय संस्कृति. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

39. पाल, बिपिन चन्द्र. (2014). राष्ट्रवाद और भारत. प्रभात प्रकाशन।

40. मुखर्जी, राधाकुमुद. (2018). भारत की मौलिक एकता. राजपाल एंड संस।

41. यशदेव शल्य. (2016). भारतीय संस्कृतिः स्वरूप और विकास. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

42. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2015). भारतीय दर्शन (भाग 1 एवं 2). राजपाल एंड संस।

43. रामधारी सिंह 'दिनकर'. (2017). संस्कृति के चार अध्याय. लोकभारती प्रकाशन।

44. विवेकानन्द, स्वामी. (2018). विवेकानन्द साहित्य (सम्पूर्ण). अद्वैत आश्रम।

45. शर्मा, रामविलास. (2014). भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश. राजकमल प्रकाशन।

46. सिंह, के. एन. (2019). वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था. रावत पब्लिकेशन।

47. सक्सेना, आर. के. (2018). अंतरराष्ट्रीय राजनीति. साहित्य भवन।

48. सावरकर, विनायक दामोदर. (2015). हिन्दुत्व. प्रभात प्रकाशन।

Cite this Article:

यादव रत्नेश कुमार केदारनाथ, डॉ. मनोज सिंह यादव, "वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवादः चुनौतियाँ और संभावनाएँ" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.449- 457, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

यादव रत्नेश कुमार केदारनाथ[1], डॉ. मनोज सिंह यादव[2]

For publication of research paper title

वैश्वीकरण के युग में भारतीय राष्ट्रवादः चुनौतियाँ और संभावनाएँ

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.47